हमारे समाज को वैज्ञानिक एवं तार्किक सोच की जरूरत है

एक विधवा बहू ने अपनी सास को बताया कि, वह तीन माह के गर्भ से है परिवार में हंगामा मच गया, समाज में भूचाल आ गया, लोगों ने पंचायत जुटाई और उस बहू से बच्चे के बाप का नाम जानना चाहा, भरी पंचायत में बहु ने बताया कि, तीन माह पूर्व मैं प्रयागराज, त्रिवेणी संगम स्नान करने गई थी, स्नान के समय मैंने गंगा का आहवान करते हुए तीन बार गंगा जल पी लिया था हो सकता है, उसी समय किसी ऋषि महात्मा, महापुरुष का गंगा में वीर्य अस्खलन हो गया और वो आहवान के साथ मैं पी गयी, उसी से मैं गर्भवती हो गई।

सरपंच जी ने कहा, यह असंभव है, ऐसा कभी हो नहीं सकता कि, किसी के वीर्य पी लेने से कोई गर्भवती हो जाय, उस महिला ने सरपंच को जवाब दिया और कहा, हमारे धर्म ग्रंथों में यही बात तो दिखाई गई है कि, विभँडक ऋषि के वीर्य स्खलन हो जाने से श्रृंगी ऋषि पैदा हुए,

हनुमान जी का पसीना मछली ने पी लिया, वह गर्भवती हुई और मकरध्वज पैदा हुए, सूर्य के आशीर्वाद से कुंती गर्भवती हो गई और कर्ण पैदा हुए, मछली के पेट से मत्स्यगंधा (सत्यवती) पैदा हुई, खीर खाने से राजा दशरथ के तीनों रानियां गर्भवती हई और चार पुत्र पैदा हो गये, जमीन के अंदर गड़े हुए घडे से सीता पैदा हुई! ये सारी बातें संभव है, किन्तु मेरी बात असंभव है!

वैसे मैं बताना चाहती हूं कि मैं गर्भवती नहीं हूँ मैंने यह नाटक इसलिए किया था कि, इस पाखंडी समाज की आंख खुल जाय, आप लोग ऐसे धर्म पुस्तकों को आज के समाज को जरूरत नहीं है जिससे कि पाखंड, अविश्वास एवं अज्ञानता परोसा जाए, जिसमे ऐसी कहानियाँ लिखी गयी है आप लोग चाहें तो मेरा मेडिकल परीक्षण कर सकते हैं!

हमारे समाज को वैज्ञानिक एवं तार्किक सोच की जरूरत है, अंधविश्वास, पाखंडी एवं अंधभक्ति से मुक्त हो।

-ब्रिंद कुमार

विशेष / जब कोई स्त्री स्वयं पर हुए शोषण की बात करती है

प्रीति अज्ञात जैन

प्राय: लोग कहते हैं कि "जब इतने लंबे समय तक इनका शोषण हो रहा था तो उसी वक़्त आवाज़ क्यों नहीं उठाई?"

कितना आसान है न यह कह देना! पर इसका उत्तर समझना सबके बस की बात नहीं! सुनिए, स्त्रियों को बोलने में समय लगता है क्योंकि उसके सामने पहले उसका परिवार आता है। उससे जुड़े लोग आते हैं। वह जानती है कि ये समाज उसे जीने नहीं देगा और परिवार की उम्र ताने सुनते कटेगी। घर से बाहर निकलना बंद हो जाएगा।

जान लीजिए कि जिसे आप मुँह बिचकाकर अनदेखा कर जाते हैं, उपहास उड़ाते हैं, वह बहुत ही हिम्मत और साहस का काम है। आपको नहीं पता कि इस हादसे को दुनिया के सामने लाने से पहले वह अपने-आप से कितना लड़ी होगी। कितनी ही बार टूटकर बिखरी होगी और फिर खुद ही खुद को संभाला होगा। बोलते समय न जाने कितनी बार गला रुँधा होगा, शब्द अटके रहे होंगे।

यह आम स्त्री की कहानी है। इसलिए इसका उत्तर पाने के लिए कहीं दूर जाने की आवश्यकता नहीं। अपने घर की स्त्रियों से पूछिए। दो साल की छोटी बच्ची से लेकर आँखों में मोतियाबिंद लिए वानप्रस्थ में प्रवेश करती स्त्री से पूछिए कि क्या कभी उनका शोषण हुआ है? उनकी आँखों की शर्मिंदगी और चेहरे का उड़ा रंग आपके होश उड़ा देगा। आपके पैरों तले जमीन खिसक जाएगी, आप कहीं डूबकर मर जाना चाहेंगे जब वो कहेगी कि "घर की इज़्ज़त की खातिर मैं चुप रही।"

वो वर्षों पुरानी घटना और उसके ज़ख्म अब भी उसके ज़हन में उतने ही ताजा हैं जितना ताजा आपका यह सवाल है। कभी सोचा है कि कहीं जाने के लिए वह एक साथ क्यों तलाश करती है? बाहर स्वयं अकेले जाने से या बेटी को भेजने से क्यों डरती है? कभी उसकी आँखों में तैरते भय को पढ़ सके हैं आप? कभी सोचा कि एक दर्द को छुपाकर जीना और उसके साथ मुस्कुराते हुए रहना क्या होता है?

वह कहती नहीं तो इसका अर्थ यह नहीं कि वह कहना नहीं चाहती, बल्कि इसलिए नहीं कहती कि आपसे बर्दाश्त न हो सकेगा। वह अपनी पीड़ा को सहन करते हुए इस बात की चिंता अधिक करती है कि आपकी ये नाक, जिसकी लंबाई स्त्री की देह और उसके लुटने के अनुपात पर निर्भर है, कहीं कट न जाए! उसे यह सोचकर भी घबराहट होती है कि फिर उसका परिवार समाज में जी कैसे सकेगा! कितनी बदनामी होगी! लोग क्या कहेंगे? जिसने इज़्ज़त 'लूटी', वह तो शान से घूमेगा क्योंकि पुरुष है। और फिर इज़्ज़त तो स्त्रियों की ही होती है। उसे ही लूटा जाता है, वही दाँव पर लगती है, उसे ही बेचा और खरीदा जाता है। कोई भी युग रहा हो, पवित्रता की परीक्षा में सदा स्त्रियाँ ही बैठाई गईं हैं और पुरुष न्यायाधीश बना इतराया है।

बचपन से ही लड़कियों के दिमाग में कूट-कूटकर भर दिया जाता है कि "तुम ही हमारा मान हो। देखना, कुछ ऊँचनीच न हो जाए वरना हम कहीं के न रहेंगे। इज़्ज़त को बचाने का भार भी उसी पर है। क्योंकि हर हाल में उसे ही सुनना पड़ता है कि अकेले क्यों गई थी? रात में जाने की क्या जरूरत थी? इतने छोटे कपड़े क्यों पहने? इतना हँस-हँसकर क्यों बात कर रही थी? जी, सही समझे! सारा दोष उसी का है। कुल मिलाकर पीड़िता ही अपराधी है।

दरअसल पितृसत्तात्मक समाज ने बड़ी चतुराई से स्त्रियों को अपनी इज़्ज़त का फॉर्मूला बना लिया। एक ऐसा फॉर्मूला जो अब पूर्णत: सिद्ध हो चुका है।

अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस पर

करोना काल : प्रवासी मजदूर

जयपाल

हम तो जाना चाहते थे
अपने गांव में/अपने देस में
अपने छप्पर में

टूटी हुई खाट के पास अपनी गाय/भैस के पास
घास-फूंस/गोबर के पास अपनी बस्ती में/अपनों के पास

हम अपनी रोज़ी रोटी छोड़ कर जा रहे थे
अपनी आधा सामान छोड़ कर जा रहे थे
हम कुछ लूट कर नहीं ले जा रहे थे
हमारी गठरी में सोना चांदी नहीं था
बस फटे पुराने कपड़े और कुछ बर्तन ही थे

जान किस को प्यारी नहीं होती
बस यही गलती हो गई हमसे
कि घर से दूर मरना रास ना आया
हम प्रवासी थे, परदेसी थे
पर विदेशी नहीं थे
न ही पाकिस्तानी

पर हमें तो मार दिया गया
रात के अंधेरे में
पुलिस के घेरे में
मां ,बहन और %भैये%की गाली से
लाठी,डंडे और गोली से
हम दौड़ते रहे खेतों में
हम तड़पते रहे सड़कों पर
हम सड़ते रहे गंगा-जमुना में

हमें कौन दफनाता कौन करता संस्कार !
हमारी ऐसी किस्मत कहां!

करोना बहुत ख़तरनाक था
पर हम तो उससे भी ज्यादा ख़तरनाक थे शायद
सबसे बड़ी महामारी तो हम ही थे

हमें पकड़ा गया जंगली जानवरों की तरह
हमें जकड़ा गया फरार कैदियों की तरह
हमें रखा गया सुअरों की तरह
हमें छोड़ा गया जूठन की तरह
हमें तो मारा गया
घेर-घेर कर

हमारी टांगें तोड़कर हमारा सिर फोड़कर
हमारे कपड़े फाड़ कर हमारे कपड़े उतार कर

हमें मारना ही था तो कोई और तरीका खोज लेते
तुमने ये तरीके कहां से खोजे?
तुमने ये ट्रेनिंग कहां से पाई
ऐसे तो जल्लाद भी नहीं मारता

हमें इस तरह क्यों मारा गया
इस तरह मार कर तुम्हें क्या मिला
कौन से जन्म का बदला लिया
तुम हमें मारते हो
या कोई पुराना दुश्मनी निकालते हो

हम जीना चाहते थे हम जीने के लिए भाग रहे थे
पर हम नहीं जानते थे
कि हमें हर हाल में मरना ही होगा
पर हम इस तरह नहीं मरना चाहते थे
जिस तरह तुमने मारा
एक दिन सबको मरना है
हम भी मर जाते किसी तरह
जैसे बाकी मजदूर मरते हैं
काम करते हुए
ग़रीबी से लड़ते हुए

हम नहीं जानते थे हमारा मरना या जीना
हमारे हाथ में नहीं तुम्हारे हाथ में है

हम कहां जा रहे थे ! हमें तो जी कर या मर कर
फिर यहीं आ जाना था हम कहां तक भाग सकते थे
कोल्हू का बैल भाग कर कहां जाएगा
पिंजरे का पंछी कहां तक उड़ेगा
चौरासी लाख जुनियां हैं साहेब
किसी भी जून में जाएंगे
तुम्हारे आस-पास ही रहेंगे
तुम्हारे ही सेवा करेंगे
तुम्हारे चरणों में ही जीना है
तुम्हारे चरणों में ही मर जाना है
मजदूरी तो बस एक बहाना है !
जीना यहां मरना यहां !!
इसके सिवा जाना कहां !!!